OM-9- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 09/07/2021 9:39 AM Page 9

स्वतंत्रता के मायने

एक राज्य है, एक राष्ट्र है दोनों में संविधानिक रूप से बहुत से अन्तर बताये जाते हैं। कहते हैं राज्य और राष्ट्र में अन्तर क्या है? राष्ट्र एक भावना है जो सम्पूर्णता को दर्शाता है। राज्य समप्रभुता के साथ जुड़ा हुआ होता है। अभी दो चीज़ें एक-दूसरे के परस्पर अभी तक चल रही हैं। लेकिन राष्ट्र की भावना के साथ हम सारे जुड़े हुए होते हैं। राष्ट्र किसका है? हम सभी का है। और हम सभी उस राष्ट्र के राष्ट्रवादी कहे जायेंगे, कहा भी जायेगा कि हम हमारी भारतीय, हमारी नेशनैलिटी क्या है तो कहते हैं हम भारतीय हैं। अपने आपको आइडेंटिफाय करते हैं, अपने आपको पहचान दिलाते हैं। लेकिन आप सोचिए जब आप पैदा हुए इस धरती पर पूरे विश्व में कहीं भी, तो उस समय आपकी नेशनैलिटी क्या थी, आपकी पहचान क्या थी! आप स्वतंत्र थे। लेकिन जहाँ आप रहे उस राष्ट्र के साथ हमको जोड़ा, न कि हम जुड़े। मतलब जो हमारी आत्मा की या स्व की या इस सिस्टम के साथ जुड़ाव की जो घटना है वो वहाँ से शुरू होती है जहाँ से हमको जोड़ा जाता है।

लेकिन उसके साथ जुड़ने के बाद हम अपनी व्यक्तिगत भावना को जोड़ कर, किसी भी व्यक्ति ने अगर कोई कमेंट किया, किसी ने कुछ बोला तो उसके ऊपर भावावेश में आकर बहुत सारे कदम उठाते हैं। आपने मेरे राज्य के बारे में बोला, आपने मेरे राष्ट्र के बारे में बोला लेकिन जो सच्ची और श्रेष्ठ भावना है वो किसी राज्य व राष्ट्र से ऊपर होती है। अगर हम पूरे विश्व को एक छोटे से पोट में रखकर देखें या छोटे से गमले में रखकर देखें तो पूरे गमले में पूरा विश्व कैसा नज़र आयेगा! हम सभी उस पूरे विश्व में कहीं छोटे-छोटे स्थानों पर हैं और अपनी-अपनी व्यक्तिगत स्थिति के आधार पर लड़ रहे हैं। लेकिन कहीं कोई थोड़ा भी स्वतंत्र नहीं है।

हर कोई हर पल, हर क्षण विरोध कर रहा है और सुख इस बात से ज़्यादातर तालुक रखता है कि हम उस स्थान पर, उस परिस्थिति में कितना ज़्यादा संतुष्ट हैं तो हम ज़रूर किसी राज्य या राष्ट्र में हैं लेकिन वहाँ भी बहुत सारे बंधन है। सरकारों के, आस-पास के एरिया के, वहाँ के अधिकारियों के, अलग-अलग नियम-कानूनों के दायरे में रहकर हमको काम करना पड़ता है।

तो राष्ट्र और राज्य के ऊपर आता है साम्राज्य। पूरा विश्व अगर हमारे साथ जुड़े तो गलती कहां हो रही है हमसे! गलती सिर्फ यहाँ हो रही है कि जिस राज्य और राष्ट्र के साथ हमारा जुड़ाव है, हम सभी उसके साथ परतंत्रता के साथ जी रहे हैं। हर बार 15 अगस्त आयेगा, हर बार स्वतंत्रता दिवस आयेगा और हम सभी नारे लगाकर कोई न कोई कास्ट के साथ, कोई न कोई क्लास के साथ, कोई किसी न किसी धर्म के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है माना परतंत्र है। आपको पता हो कि हमारे शरीर का ज़रूर धर्म हो सकता है जिस धर्म में हम पैदा हुए परंतु आत्मा का कोई धर्म नहीं है। आत्मा का धर्म शांति है, स्वतंत्र है। वो हमेशा सुख से रही है। वो किसी भी धर्म विशेष, राज्य, राष्ट्र विशेष के साथ अपना तालुक नहीं रखती। तो जब तक हम खुद की स्वतंत्रता को निश्चित नहीं करते तब तक हम देश के साथ न्याय नहीं कर सकते।

देश में हरेक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से पूरी तरह से स्वतंत्र है। लेकिन आज कुछ इच्छायें, कुछ कामनायें, कुछ चीज़ें ऐसी उसके साथ जुड़ी हुई हैं जिससे वो रहकर भी, जिससे वो जानबूझकर बंधा हुआ है या यूं कहें कि सबकुछ जानते हुए वह उसको छोड़ नहीं पा रहा है। इसको हम विकार कहते हैं। तो परमात्मा आ करके सच्चे स्वराज्य की स्थापना करने के लिए कि जब तक हम अपने स्वराज्य यानी अपनी इन्द्रियों के राजा नहीं बनें तब तक हम बाहरी दुनिया की किसी भी चीज़ का सुख नहीं ले सकते।

सबके साथ रहेंगे लेकिन सुखी महसूस नहीं करेंगे। तो सच्ची स्वतंत्रता है अपनी इन्द्रियों को जीतना, अपने मन को जीतना और जीतने के बाद जो मिला, जितना मिला उसमें पूरी तरह से संतुष्ट हैं। तो ये है स्वतंत्रता के साथ और उसके सही मायने के साथ अपने जीवन को आगे बढ़ाना तो निश्चित रूप से आप सभी इस पर विचार करेंगे। और ये विचारणीय विषय भी है। तो इसलिए थोड़ा-सा अपने दायरे से निकल इसके बारे में सोचें तो ज़रूर कोई न कोई हल मिलेगा।

! यह जीवन है !

कहा जाता है कि :

नाव तब तक नहीं डूबती जब तक पानी उसके चारों ओर रहता है, बल्कि नाव तब डूबती है जब पानी उसके अंदर आ जाता है। ठीक उसी प्रकार हम भी अपने चारों ओर की व्यर्थ की बातों को स्वयं के अन्दर न जाने दें क्योंकि उसका बोझ ही हमें डुबा देता है।

अतः जब हमारा मन-बुद्धि भगवान से लगाकर रखेंगे और हमारे जीवन का उद्देश्य ऊंचा होगा, तब हम स्वतः ही हर छोटी-बड़ी व्यर्थ बातों को या व्यवहार को नज़र अंदाज़ करने में सक्षम हो जाएंगे, जो हमें विचलित अथवा दुःखी करती हैं।

बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ब्रिलियंट कॉन्वेंट स्कूल में आयोजित योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. रवि, ब्र.कु. चंदन, ब्र.कु. रिमझिम तथा शशि भूषण भाई।

शमसाबाद-आगरा(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए थाना अध्यक्ष राकेश यादव। मंचासीन हैं ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, श्रीनाथ सेवा संस्थान के अध्यक्ष कुंज बिहारी अग्रवाल, समाजसेवी मंजू यादव तथा डॉ. शिवकुमार।

राउरकेला-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राउरकेला डिविज़न के तत्वाधान में ब्रह्माकुमारीज़ के कोयलनगर सेवाकेन्द्र द्वारा राउरकेला हेड पोस्ट ऑफिस में 'कल्याण के लिए योग' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में जमेश्वर गड्नायक,सुपरीन्टेंडेंट ऑफ पोस्ट्स, दीपक कुमार,असिस्टेंट सुपरीन्टेंडेंट ऑफ पोस्ट,राउरकेला इस्ट डिविज़न, संजय कुमार,ऑफिस सुपरवाइज़र,पोस्टल डिविज़न ऑफिस, संजीव कुमार प्रधान,इंस्पेक्टर ऑफ पोस्ट्स,राउरकेला वेस्ट सब-डिविज़न, ब्र.कु. राजीव, ब्र.कु. धनंजय, ब्र.कु. चित्तरंजन तथा अन्य पोस्ट ऑफिस कर्मचारी।

सुगौली-बिहार। जगदम्बा सरस्वती 'मम्मा' के 56वें स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन के जिला अध्यक्ष किशोर पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा बहन। साथ हैं अधिवक्ता ब्र.कु. शिव पूजन राऊत।

मीरगंज-बिहार। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के 56वें पुण्य स्मृति दिवस पर मातेश्वरी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. उर्मिला बहन।